।।अर्हम् ।।
आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर)
दूरभाशः 01565-224600, 224900
ई-मेल : jstsdgh01565@gmail.com

आचार्य महाप्रज्ञ से प्रेक्षाध्यान सीखने पहुँचे रसियन लोग

संस्कृत :लोक सुनाकर विदेि-ायों ने किया मंत्र मुग्ध

-तुलसीराम चौरड़िया-

श्रीडूँगरगढ़ 6 जनवरी : सोने की चिड़िया के नाम से विख्यात हिन्दूस्तान सात समुन्दर पार बसने वालों के दिल में भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यहां की प्राचीन अध्यात्म की परम्परा आज भी दे-ा को वि-व गुरु के रुप में स्थापित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। ऐसा मानना है भारतीय ऋशि परम्परा के महायोगी, अध्यात्म के गूढ़ रहसयों के ज्ञाता आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में आने वाले विदे-ी सैलानियों एवं रसियन प्रेक्षाध्यान प्रि-ाक्षुओं का। पीछले तीन दिनों से प्रेक्षाध्यान का प्रि-ाक्षण ले रहे 9 व्यक्तियों के रसियन दल ने आज प्रज्ञासमवसरण में संस्कृत, प्राकृत में रचित :लोकों का सस्वर उच्चारण कर सबको मंत्रमुग्द कर दिया। जहां दे-ा के युवा अंग्रेजी के पीछे भारत की आत्मा कहीं जाने वाली संस्कृत भाशा को भूलाते जा रहें हैं वहीं हिन्दी, अंग्रेजी से अनजान रसियन संस्कृत प्राकृत के :लोकों को बड़ी सहजता से सीख सबको आ-चर्य में डाल दिया।

मुनि जयन्त के अनुसार आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा प्रणीत प्रेक्षाध्यान रसियन लोगों के बीच काफी लोकप्रिय होता जा रहा है। प्रेक्षाध्यान को सीखने के लिए रुस से प्रतिवर्श लगभग 3 सौ लोग आचार्य प्रवर के सान्निध्य में पहुंचते है और । यहां से प्रेक्षाध्यान का प्रि-ाक्षण लेकर अपने दे-ा में प्रेक्षा सेन्टर चलाते हैं। ऐसे सेन्टर कूर्घन एवं रुस में 40 से भी ज्यादा चल रहे हैं और उन सेन्टरों में सैकड़ों लोग प्रेक्षाध्यान सीखते हैं।

प्रेक्षा प्रि-ाक्षक गलिता वासोवलिना के नेतृत्व में पहुंचे इस दल में परमाणु ऊर्जा के वैज्ञानिक प्रो. विक्टर सारकोव के अनुसार प्रेक्षाध्यान वंडर फूल पावर है। इससे व्यक्ति को तनाव से राहत मिलती है और नई खोज करने की एनर्जी प्राप्त होती है। उन्होनें आचार्य महाप्रज्ञ को देवदुलर्भ महामानव बताया। पीछले सालों में प्रेक्षाध्यान के प्रयोग कर सैकड़ों लोगों को लाभ पहुंचाने वाली दल प्रमुख गलिता वासोवलिना ने प्रेक्षाध्यान को आदतों के परिश्कार की वैज्ञानिक पद्धति बताया।

सतत् भाव :ुद्धि का अभ्यास करें - युवाचार्य महाश्रमण

तेरापंथ भवन के प्रज्ञासमवसरण में दैनिक प्रवचन करते हुए युवाचार्य महाश्रमण ने कहा दुनियां में नियति तत्व भी काम करता है। नियति की सर्वथा उपेक्षा नहीं की जा सकती । पुरुशार्थ का अपना मूल्य है। आचार्य महाप्रज्ञ ने नियति की परिभाशा जागतिक नियम के रुप में की है। पूनर्जन्म के सिद्धान्त को गीता व जैन द-र्न समान रुप से मान्यता देते है। जैन आगम साहित्य में भी सिद्धान्त है कि जिस ले-या में मृत्यु होती है उसी ले-या में जन्म होता है। आयुश्य का वध, मृत्यु और अगला जन्म तीनों एक ही ले-या में होते है। मृत्यु के क्षण को जाना नहीं जा सकता है। अतः हमें हर पल भाव--ुद्धि का अभ्यास करना चाहिए। निरंतर :ुभ

भाव एवं :ुद्ध भावों में रहें।

उतराध्ययन में कहा गया कि काल का कोई भरोसा नहीं । कोई भी व्यक्ति अमर नहीं है। साधु जीवन ग्रहण करके 15 भव में मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। जैन द-र्ान का यह सिद्धान्त मेरे वैराग्य का बहुत बड़ा निमित्र बना।

गीता में कहा गया है कि जैसे व्यक्ति पुराने कपड़ों को छोड़कर नया वस्त्र धारण कर लेता है वैसे ही आत्मा नई देह को धारण कर लेती है।

युवाचार्य प्रवर ने इतिहास के प्रसंगो की व्याख्या करते हुये आचार्य रायचंद जी की मालव-यात्रा व थली क्षेत्र की यात्राओं की चर्चा की जैन समुदाय मे किस प्रकार अध्यात्म चेतना का संचार हुआ। मानव-मात्र का कल्याण हुआ उसका वर्णन किया।

प्रारंभिक प्रवचन में मुनिश्री दिने-ाकुमार ने कहा सम्यग् द-र्ान के बिना न ज्ञान सम्यग् होता है और न चारित्र सम्यग् होता है। जीवन निर्माण के सूत्रों की चर्चा करते हुये उन्होनें कहा कि स्वयं सत्य खोजें और सबके साथ मैत्री करें।